بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA
Ph:+91-1872-220186, Fax:+91-1872-224186, Mob.98150-16879, E-Mail:ansarullah@qadian.in
.Mob:9682536974, Khulasa khutba of 24.10 .25

तबूक नामक युद्ध के परिवेश में नबी करीम ﷺ के जीवन चरित्र का वर्णन।

सारांश ख़ुत्ब: जुमः

सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआलबिनस्रिहिल अज़ीज़ि,

यू.के., स्थान मस्जिद मुबारक,बयान फर्मूदः (अखा तिथि 24,1404 हश) 24.10. 2025

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ۔ مَالِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَاِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ أَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ۔

तशह्हुद ,तअव्वुज़ तस्मियः तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बि नसरिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- आज मैं तबूक नामक युद्ध की घटनाओं के विषय में और अधिक बयान करूंगा।

एक जद्द बिन क़ैस नामक व्यक्ति के विषय में बयान हुआ है, यह भी मुनाफिकों में का एक व्यक्ति था जो अब्दुल्लाह बिन उब्बई के बाद मुनाफिकों का दूसरा बड़ा लीडर था। यह वही था जिसने सुलह हुदैबियः के अवसर पर भी बैअत नहीं की थी। इसने भी रसूलुल्लाह ﷺ की सेवा में उपस्थित होकर लड़ने के लिए न जाने का बहाना बनाया था। अतएव लिखा है की उसने कहा की या रसूलुल्लाह! मुझे रुकने की अनुमति दें एवं फ़ितने में न डालें। ख़ुदा की क़सम, मेरी क़ौम मेरे विषय में ख़ूब जानती है कि मुझसे बढ़कर कोई व्यक्ति महिलाओं का चाहने वाला नहीं और मुझे डर है की यदि मैंने बनू असफ़र अर्थात रोमियों की महिलाओं को देख लिया तो धैर्य नहीं रख पाऊँगा। यह असभ्य जवाब सुन कर रसूलुल्लाह स. ने उसकी ओर से मुंह फेर लिया और फ़रमाया कि ठीक है

जाओ तुम्हें अनुमति है। इसके बेटे हज़रत अब्दुल्लाह बिन जद्द रज़ीअल्लाह अन्हु, जो की बद्री सहाबी थे तथा अति निष्ठावान थे, यह पूरी बात सुन कर नाराज़ हो गए और कहने लगे कि नहीं, अल्लाह की क़सम! यह निफ़ाक़ (पाखंड) है जिसके कारण तुम युद्ध के लिए नहीं जा रहे हो, और अल्लाह की क़सम! तुम्हारे बारे में रसूलुल्लाह स. पर अवश्य क़ुरआन नाज़िल होगा। एक रिवायत में है कि जद्द बिन क़ैस के बारे में यह आयत नाज़िल हुई कि- और इनमें से वह भी है जो कहता है मुझे छूट दे दे तथा मुझे परीक्षा में मत डाल। कहा जाता है कि बाद के ज़माने में इसने तौबा कर ली थी, और अच्छी तौबा की थी, और बाद में हज़रत उस्मान रज़ी. की ख़िलाफ़त के दौर में वफ़ात पाई।

मदीने में मुनाफ़िक़ एवं यहूदी झूठी अफ़वाहें फैलाकर मुसलामानों के साहस कम करने तथा मुसलमानों को युद्ध पर जाने से रोकने का भरसक प्रयास करते, और इसके लिए वे विभिन्न प्रकार के षडयंत्र उपयोग में लाते थे। उन्होंने अपना एक केंद्र बनाया हुआ था, आंहज़रत स. ने उस ठिकाने को ध्वस्त करने का आदेश दिया। यद्यपि आंहज़रत ﷺ अपनी दया एवं करुणा के कारण इन लोगों की बातों को अनदेखा करते थे, परन्तु जब निज़ाम के विरुद्ध कोई भयानक षडयंत्र होता तो इसको बड़ी युक्ति एवं कठोरता के साथ नष्ट करने के लिए कार्यवाही भी की जाती थी। यह मूल मन्त्र याद रखना चाहिए की व्यवस्था के विरुद्ध यदि कोई बात हो, तो फिर सख़्ती भी की जाती है, फिर वहाँ नर्मी का सवाल नहीं। अतएव इसी प्रकार की एक काररवाई इस अवसर पर भी की गयी, किन्तु आंहज़रत ﷺ की रहमत और आप स. की क्षमाशीलता की भावना फिर भी ऐसी छाई रही की आप स. ने इनमें से किसी को भी न गिरफ़्तार करने का निर्देश दिया और न ही कोई अन्य दंड दिया, परन्तु विरोधी योजनाओं के इस अड्डे अर्थात हेड-क्वाटर को नष्ट कर दिया गया।

तबूक की यात्रा के लिए हर कोई तय्यारी में व्यस्त था, धन के बलिदान का क्रम भी जारी था ताकि यात्रा के व्यय का प्रबंध हो सके। निर्धन एवं असहाय सहाबी रज़ी. आंहज़रत स. की सेवा में उपस्थित होते थे तो तय्यारी के लिए उनकी सहायता की जाती। इसी तरह समृद्ध लोग उन सहाबियों के लिए भी सवारियों की व्यवस्था कर रहे थे जिनके पास सवारी न थी, क्यूंकि सवारी के बिना यह यात्रा कठिन थी और आंहज़रत स. का भी निर्देश यही था की हमारे साथ वही व्यक्ति जाए जो शक्ति शाली हो एवं यात्रा की कठिनाई को सहन कर सके तथा उसके पास सवारी और यात्रा के लिए सामग्री उपलब्द हो।

इस अवसर पर कुछ सहाबी रोते हुए आंहुज़ूर ﷺ की सेवा में उपस्थित हुए, उन्होंने आप स. से सवारी देने के लिए प्रार्थना की और उन्हें इसकी आवश्यकता भी थी। रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया की मेरे पास तो अब कुछ भी नहीं जिस पर तुम्हें सवार

कर सकूं। इस पर वे रोते हुए वापस लौट गए। उन सहाबियों की श्रद्धा एवं निष्ठा तथा असहाय होने की इस अवस्था का बयान अल्लाह तआला ने क़ुरआन करीम में इस प्रकार किया है कि न इन लोगों पर कोई आरोप है जो तेरे पास उस समय आए जब युद्ध की घोषणा की गई थी। इस लिए कि तू उनके लिए सवारी का प्रबन्ध कर दे, तो तूने उत्तर दिया की मेरे पास कोई चीज़ नहीं है, जिसपर मैं तुम्हें सवार कर सकूं, और यह जवाब सुनकर वे चले गए और इस दुःख के कारण उनकी आँखों से आंसू बह रहे थे की अफ़सोस! इनके पास कुछ नहीं, जिसे वे ख़ुदा की राह में ख़र्च करें। यह सूर: तौबा की आयत है। बाद में सहाबा रज़ी. को यात्रा सामग्री मिल गई और वे आंहज़रत ﷺ के साथ रवाना हुए। हज़रात मूसा अल-अशरी रज़ी. के क़बीले के लोगों ने भी हुज़ूर स. स. की सेवा में सवारी के लिए निवेदन किया, ये छः लोग थे। इन्होने आप रज़ी. को अपना प्रतिनिधि बनाकर हुज़ूर स. की सेवा में भेजा। उन्हें भी आंहज़रत स. ने यही फ़रमाया कि मेरे पास कुछ भी नहीं, जो मैं तुम लोगों को दे सकूं। इस पर वे लोग रोते हुए वहाँ से वापस हुए, परन्तु उसी समय आप स. ने हज़रत सअद बिन उबाद: रज़ी. से ऊँट ख़रीदे और हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ी. को बुला भेजा, और फ़रमाया की ये ऊँट ले जाओ तथा स्वंय और अपने साथियों के दे दो।

इस युद्ध पर जाते हुए मदीने में कार्यवाहक (अमीर) बनाने के विषय में विभिन्न कथन मिलते हैं। एक कथन के अनुसार नबी करीम ﷺ ने हज़रत मुहम्मद बिन मसलमा रज़ी. को मदीने में अपना अमीर बनाया। इसके अतिरिक्त हज़रत सिबाअ बिन उरफ़तह रज़ी, हज़रत अली रज़ी. और हज़रत अब्दुल्लाह बिन उम्मे मकतूम रज़ी. के नाम भी आते हैं। इस बात को इस प्रकार समझा जा सकता है कि ये चारों लोग ही नायब नियुक्त किये गए थे, किन्तु इनके दायित्वों में अन्तर था। चूंकि यह एक लम्बी यात्रा थी इस लिए आंहज़रत ﷺ ने अपने परिवार की देख रेख के लिए तथा घरेलू आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए हज़रत अली रज़ी. को मदीने में ही रहने का इरशाद फ़रमाया था। मुनाफ़िक़ लोग जिनका काम ही आरोप एवं निन्दा था, इस पर बातें बनाने लगे कि ये नबी करीम ﷺ के लिए बोझ थे, इस लिए आप स. उन्हें साथ लेकर नहीं गए। इन आरोपों को सुनकर तथा आस पास मुनाफिकों को देख कर, ख़ुद ही घबरा कर हज़रत अली रज़ी. ने अस्त्र शस्त्र लिए और आंहज़रत ﷺ की सेवा में उपस्थित हो गए। आप स. अभी मदीने से तीन कि.मी. की दूरी पर जरफ़ नामक स्थान पर ही रुके हुए थे। आप रज़ी. ने अपनी चिंता एवं घबराहट को बयान किया तो आंहज़रत ﷺ ने आप रज़ी. को दिलासा देते हुए ऐसा वाक्य फ़रमाया जो आप रज़ी. की शान को चार चाँद लगा गया। आप स. ने हज़रत अली रज़ी. से फ़रमाया कि ऐ अली! क्या तुम ख़ुश नहीं कि तुम मेरे लिए वैसे ही हो जैसे हारून अलै. मूसा अलैहिस्सलाम के लिए, सिवाए इसके कि

तुम मेरे बाद नबी नहीं।

तबूक के लिए मुसलमानों की संख्या के विषय में लिखा है कि रसूलुल्लाह ﷺ लड़ाई की तय्यारी के लिए हर प्रकार की प्रत्यक्ष व्यवस्था करने के बाद दुआ की ओर ध्यान मग्न हुए और तय्यारी के आरम्भ से लेकर तबूक की ओर रवानगी तक यह दुआ करते रहे اَللّٰهُمَّ اِنْ تُهْلِكْ هٰذِهِ الْعِصَابَةَ فَلَنْ تُعْبَدَ فِي الْاَرْضِ अर्थात, ऐ अल्लाह! यदि यह छोटी सी जमाअत नष्ट हो गई तो फिर इस धरती पटल पर तेरी बन्दगी करने वाला कोई नहीं होगा। अद्भुत आश्चर्य जनक बात है कि आंहज़रत ﷺ के सबसे पहले युद्ध, अर्थात बदर के युद्ध के अवसर पर भी इस दुआ का वर्णन मिलता है, और आप स. के इस अन्तिम युद्ध के अवसर पर भी इसी दुआ का वर्णन मिलता है।

अतएव तेज़ गर्मी के मौसम में, लम्बी यात्रा तथा अन्य अनेक समस्स्याएं और मुनाफ़िकों के प्रोपगंडे के बावजूद तीस हज़ार की संख्या में एक विशाल सेना तय्यार हो गई, जिसमें दस हज़ार घुड़सवार थे। यह आंहज़रत ﷺ के जीवन में किसी भी युद्ध के लिए सबसे बड़ी सैन्य शक्ति थी। आप स. ने तबूक के युद्ध में सबसे बड़ा झंडा हज़रत अबू बकर रज़ी. को प्रदान किया, इसके अतिरिक्त हज़रत जुबैर रज़ी, हज़रत उसैद बिन हुज़ैर रज़ी, हज़रत अबू दुजाना रज़ी. अथवा कुछ रिवातों के अनुसार हज़रत हुबाब बिन मुन्ज़िर रज़ी. को भी झंडे प्रदान किए गए। तबूक की लड़ाई के अवसर पर रसूलुल्लाह ﷺ ने मार्ग दर्शक के रूप में अलक़मा बिन फ़ग़वा ख़ुज़ाई और उसके वालिद को चुना जो रास्तों से भली भाँती परिचित थे, तथा तेज़ी के साथ सटीक मार्ग से ले जा सकते थे। हज़रत कअब बिन मालिक रज़ी. बयान करते हैं कि तबूक के युद्ध के लिए नबी करीम ﷺ जुमेरात के दिन निकले और आप स. जुमेरात के दिन यात्रा करना पसन्द फ़रमाते थे।

अन्त में हुज़ूरे ने मुकर्रम ग़ुलाम मुहीउद्दीन सुलेमान साहब मुरब्बी सिलसिला इंडोनेशिया, मुकर्रम डा. मुहम्मद शफ़ीक़ सैगल साहब, पूर्व नायब वाकीलुत्तसनीफ़ तहरीके जदीद रबवा तथा मुकर्रमा बुशरा परवेज़ मिन्हास साहिबा पत्नी परवेज़ मिन्हास साहब यू.एस. का सदवर्णन और नमाज़े जनाज़ा ग़ायब पढ़ाने की घोषणा फ़रमाई। हुज़ूरे अनवर ने मृतकों की मग़फ़िरत तथा दर्जात की बुलन्दी के लिए दुआ की।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ۔

عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुगम, सौम्य एवं सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है सम्पर्क अनुवादक- 9781831652

18001032131-टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमाअत, पंजाब